

## प्वाइंट 5140 फतह जब गूंजा वकिर्म बत्रा का ये दलि मांगे मोर

### वषिय सूची (Table of Contents):

- >> कारगलि युद्ध का टर्नगि पॉइंट जब प्वाइंट 5140 पर फहराया भारत का तरिगा...
- >> सफलता का नया लेटेस्ट अपडेट...
- >> श्रीनगर-लेह हाईवे की सुरक्षा जानिए रणनीतिक रूप से क्यों बेहद अहम था प्वाइंट 514...
- >> हाईवे पर मंडराता खतरा...
- >> 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स का मास्टरप्लान दुश्मन को घेरने के लिए बनी दोतरफा रणनीति...
- >> मशिन की रूपरेखा और दोतरफा हमला...
- >> कैप्टन संजीव सहि जमवाल का पराक्रम और उनका वजिय सगिनल ओह! येह, येह, येह! ...
- >> आमने-सामने की खूनी लड़ाई...
- >> भारी गोलीबारी के बीच सीधी चट्टान पर चढ़े कैप्टन वकिर्म बत्रा, दुश्मनों के बंकर क...
- >> घायल होने के बाद भी जारी रखा प्रहार...
- >> ये दलि मांगे मोर सुबह 4 35 बजे मली फतह और अमर हो गया वजिय का यह नारा...
- >> इतहास में दर्ज हुए कैप्टन बत्रा के शब्द...
- >> बना कसी जनहानिके पूरा हुआ मशिन, जसिने तय कर दी थी कारगलि युद्ध में भारत की जी...
- >> ऑपरेशन के बड़े परणाम और उपलब्धियां...
- >> नष्िकर्ष (Conclusion)...
- >> महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर...

भारतीय सैन्य इतहास में कारगलि युद्ध (Kargil War) के दौरान लखी गई शौर्यगाथाएं आज भी हर नागरिक के दलि में देशभक्तिका जज्बा पैदा कर देती हैं। 20 जून 1999 की रात को भारतीय जांबाजों ने एक ऐसा कारनामा कर दखाया था, जसिने युद्ध की पूरी दशा ही बदल दी। द्रास सेक्टर (Dras Sector) में स्थिति सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण प्वाइंट 5140 (Point 5140) को पाकसितानी घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराकर वहां भारत का तरिगा फहराया गया था। इस ऐतहासिक मशिन में कैप्टन वकिर्म बत्रा और उनके साथी जवानों की अदम्य वीरता ने दुश्मन के हौसले पस्त कर दिए थे।

### कारगलि युद्ध का टर्नगि पॉइंट: जब प्वाइंट 5140 पर फहराया भार

कारगलि युद्ध के दौरान प्वाइंट 5140 पर भारतीय सेना की जीत को सबसे बड़ा टर्नगि पॉइंट माना जाता है। 13 जून 1999 को टोलोलगि चोटी पर सफलतापूर्वक नियंत्रण स्थापित करने के बाद, भारतीय सेना के सामने अगली और सबसे बड़ी चुनौती इसी दुर्गम चोटी को वापस पाने की थी।

## सफलता का नया लेटेस्ट अपडेट

इस ऑपरेशन की सफलता ने न केवल भारतीय सैनिकों का मनोबल सातवें आसमान पर पहुंचा दिया, बल्कि पाकस्तानी सेना की रीढ़ की हड्डी भी तोड़ दी। इसी जीत के बाद भारतीय सेना ने युद्ध क्षेत्र में अपनी सर्वोच्च स्थिति (status) को दोबारा स्थापित किया और एक के बाद एक कई चोटियों को मुक्त कराने की लिस्ट तैयार की।

## श्रीनगर-लेह हाईवे की सुरक्षा: जानिए रणनीतिक रूप से क्यों बेह

समुद्र तल से करीब 17,000 फीट की अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित प्वाइंट 5140 केवल एक चोटी नहीं थी, बल्कि पूरे द्रास क्षेत्र की चाबी थी। यहां से दुश्मन सेना बेहद मजबूत स्थिति में थी और भारतीय सुरक्षा बलों की हर हलचल पर पैनी नजर रख रही थी।

## हाईवे पर मंडराता खतरा

पाकस्तानी सैनिक इस चोटी की ऊंचाई का फायदा उठाकर श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग (National Highway 1D) पर लगातार और सटीक तोपखाने से गोलाबारी कर रहे थे। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित थे:

>> आपूर्ति मार्ग में बाधा: इस हाईवे के प्रभावित होने से भारतीय सेना की रसद और हथियारों की सप्लाई लाइन पूरी तरह कटने की कगार पर थी।

>> सामरिक बढ़त: चोटी पर कब्जा होने के कारण दुश्मन भारतीय सेना की हर गतिविधिको आसानी से देख और नशाना बना सकता था।

>> अवैध घुसपैठ की नगिरानी: यह क्षेत्र घुसपैठियों के लिए भारत के आंतरिक हिस्सों में गोलाबारी निर्देशित करने का सबसे बड़ा जरिया बन चुका था।

यही वजह थी कि भारतीय सेना के उच्च नेतृत्व ने यह तय किया कि जब तक इस चोटी को आजाद नहीं कराया जाता, तब तक कारगलि में अंतिम वजिय पाना असंभव था।

## 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स का मास्टरप्लान: दुश्मन को घेरने के ल

इस बेहद कठिन और घातक मिशन को अंजाम देने की जिम्मेदारी भारतीय सेना की प्रतिष्ठित 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स (13 JAK RIF) को सौंपी गई थी। इस बटालियन का नेतृत्व उस समय के जांबाज कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल योगेश कुमार जोशी कर रहे

थे, जन्होंने दुश्मन को धूल चटाने के लिए एक अचूक मास्टरप्लान तैयार किया।

## मशिन की रूपरेखा और दोतरफा हमला

लेफ्टर्निक कर्नल जोशी ने दुश्मन की सात बेहद मजबूत और सुरक्षित चौकियों (संगरों) की पहचान की। दुश्मन को संभलने का मौका न मल्ले, इसलिए दो अलग-अलग दशाओं से एक साथ हमला करने की योजना बनाई गई:

>> ब्रावो कंपनी (Bravo Company): इस टुकड़ी का नेतृत्व जांबाज कैप्टन संजीव सहि जमवाल को सौंपा गया था।

>> डेल्टा कंपनी (Delta Company): इस महत्वपूर्ण टुकड़ी की कमान शेरशाह के नाम से मशहूर कैप्टन वकिरम बत्रा संभाल रहे थे।

20 जून 1999 की आधी रात के ठीक बाद, योजना के मुताबकि भारतीय तोपखाने (Artillery) ने चोटी पर भारी गोलाबारी शुरू कर दी ताकि दुश्मन के बंकरों को कमजोर किया जा सके। जैसे ही तोपों की गूंज शांत हुई, जैसे ही दोनों कंपनियों के वीरों ने आगे बढ़ना शुरू किया। दुश्मन ने मशीनगनों से अंधाधुंध फायरगि शुरू कर दी, लेकिन भारतीय जवानों के कदम नहीं रुके।

## कैप्टन संजीव सहि जमवाल का पराक्रम और उनका वजिय सग्निल ओह!

आधी रात के घने अंधेरे और शून्य से नीचे के तापमान में कैप्टन संजीव सहि जमवाल अपनी ब्रावो कंपनी के साथ दुश्मन की चौकियों की तरफ बढ़े। भारी गोलीबारी के बीच उन्होंने अपने जवानों का हौसला बनाए रखा और बेहद सूझबूझ से आगे बढ़ते रहे।

## आमने-सामने की खूनी लड़ाई

तड़के करीब 3:15 बजे कैप्टन जमवाल की कंपनी दुश्मन के बलिकुल नजदीक पहुंच गई। इसके बाद दोनों ओर से आमने-सामने की भीषण मुठभेड़ शुरू हो गई। कैप्टन जमवाल ने अदम्य साहस का परचिय देते हुए स्वयं आगे बढ़कर कई पाकस्तानी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।

अपनी जम्मेदारी वाले पूरे क्षेत्र को सुरक्षित करने के बाद, उन्होंने वायरलेस सेट पर अपने कमांडगि ऑफिसर को पूर्व निर्धारित गुप्त वजिय संकेत भेजा। उनके शब्द थे ओह! यह, यह, यह! । इस पहले सग्निल ने भारतीय कैप में जोश की लहर दौड़ा दी।

## भारी गोलीबारी के बीच सीधी चट्टान पर चढ़े कैप्टन वकिरम बत्रा

दूसरी तरफ, डेल्टा कंपनी के कमांडर कैप्टन वकिरम बत्रा के सामने मुश्किलें और भी ज्यादा थीं। उन्होंने चोटी तक पहुंचने के लिए सबसे कठिन और खतरनाक पूर्वी मार्ग को चुना, जहां लगभग 90 डग्री की सीधी खड़ी चट्टान थी। दुश्मन को भनक भी नहीं थी कि भारतीय जवान इस दुर्गम रास्ते से भी आ सकते हैं।

## घायल होने के बाद भी जारी रखा प्रहार

ऊपर बैठे दुश्मन ने जब वकिरम बत्रा की टुकड़ी को देख लिया, तो उन्होंने भारी मशीनगनों से गोलियों की बौछार कर दी। लेकिन कैप्टन बत्रा के इरादे चट्टान से भी ज्यादा मजबूत थे। उन्होंने सूझबूझ से काम लेते हुए दुश्मन के बंकरों पर रॉकेट दागे और सीधे बंकरों के भीतर घुस गए।

इस आमने-सामने की लड़ाई के दौरान कैप्टन बत्रा गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन उन्होंने अपनी चोटों की परवाह नहीं की। उन्होंने अकेले ही कई पाकस्तानी सैनिकों को मार गिराया और दुश्मन की सबसे घातक मशीनगन चौकी को हमेशा के लिए शांत कर दिया। आप चाहें तो देश के कानूनों और अधिकारों की आधिकारिक जानकारी के लिए इंडिया कोड: भारत के सभी कानून और अधिनियम अब एक ही पोर्टल पर! देख सकते हैं।

## ये दिलि मांगे मोर : सुबह 4:35 बजे मल्लि फतह और अमर हो गया वजिय

कैप्टन वकिरम बत्रा और कैप्टन संजीव सहि जमवाल के संयुक्त प्रहार के आगे पाकस्तानी घुसपैठिए टकि नहीं सके। सुबह ठीक 4:35 बजे प्वाइंट 5140 की चोटी पर पूरी तरह से भारतीय सेना का नियंत्रण स्थापति हो चुका था और वहां भारत का गौरवशाली तरिगा लहरा रहा था।

## इतहास में दर्ज हुए कैप्टन बत्रा के शब्द

चोटी फतह करने के बाद जब घायल कैप्टन वकिरम बत्रा ने कमांड पोस्ट को रेडियो पर अपनी सफलता की सूचना दी, तो उन्होंने एक ऐसा वाक्य कहा जो हमेशा के लिए अमर हो गया। उन्होंने कहा ये दिलि मांगे मोर! (Yeh Dil Maange More)।

यह नारा केवल एक पेप्सिको वजिजापन की लाइन नहीं था, बल्कि यह देश के युवाओं के लिए राष्ट्र सेवा और शौर्य का सबसे बड़ा प्रतीक बन गया। आज भी जब कारगलि वजिय दविस मनाया जाता है, तो कैप्टन बत्रा का यह नारा हर भारतीय की जुबान पर आ जाता है। देश की युवा प्रतभिओं को आगे बढ़ाने के प्रयासों के बारे में जानने के लिए प्रतभि को मल्लिगा पंख! आर्टकिल जरूर पढ़ें।

## बना किसी जनहानि के पूरा हुआ मशिन, जसिने तय कर दी थी कारगलि

प्वाइंट 5140 का यह पूरा सैन्य अभियान आधुनिक सैन्य इतिहास के सबसे सफल और चमत्कारी ऑपरेशनों में गिना जाता है। इस भीषण लड़ाई में भारतीय सेना को जो सफलता मिली, उसकी सबसे खास बात यह थी कि इस पूरे ऑपरेशन के दौरान ब्रावो और डेल्टा कंपनी का कोई भी जवान वीरगति को प्राप्त (युद्धजनित शहीद) नहीं हुआ।

## ऑपरेशन के बड़े परिणाम और उपलब्धियां

इस ऐतिहासिक जीत के बाद भारतीय सेना को नमिन्लखिति सफलताएं मिलीं:

>> बड़ी मात्रा में हथियारों की बरामदगी: इस ऑपरेशन में कम से कम 10 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और सेना ने एक भारी विमान भेदी मशीनगन सहित बड़ी मात्रा में गोला-बारूद जब्त किया।

>> आगे की राह हुई आसान: प्वाइंट 5140 पर कब्जे के बाद भारतीय सेना ने अपनी अगली रणनीतिक तहत प्वाइंट 5100, प्वाइंट 4700, जंक्शन पीक और थ्री पपिल्स जैसे अन्य महत्वपूर्ण ठिकानों पर भी तेजी से फतह हासिल की।

>> द्रास क्षेत्र में पूर्ण नियंत्रण: इस जीत ने द्रास क्षेत्र में भारत की स्थिति को इतना मजबूत कर दिया कि पाकिस्तानी सेना पूरी तरह बैकफुट पर आ गई।

## निष्कर्ष (Conclusion)

कारगलि युद्ध के दौरान 20 जून 1999 की रात को प्वाइंट 5140 पर मिली जीत महज एक चोटी पर कब्जा नहीं था, बल्कि यह भारतीय सेना के अदम्य साहस, बेहतरीन कूटनीति और नेतृत्व क्षमता का बेजोड़ उदाहरण था। लेफ्टनैंट कर्नल योगेश कुमार जोशी की योजना, कैप्टन संजीव सहि जमवाल का पराक्रम और कैप्टन विक्रम बत्रा (परमवीर चक्र विजेता) की अमर गाथा ने देश को एक ऐसा गौरवपूर्ण क्षण दिया जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। ये दिली मांगे मोर की वह गूंज आज भी भारतीय सेना के शौर्य की याद दिलाती है। यदि आप अन्य महत्वपूर्ण वषियों की लिस्ट और धार्मिक जानकारी का ऑनलाइन स्टेटस चेक करना चाहते हैं, तो कटिने करो से ज्यादा करो? झूठी संख्या बताए! हुआ दिवनापर जा सकते हैं।

## महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर

उत्तर: भारतीय सेना ने 20 जून 1999 की रात को एक ऐतिहासिक और सफल सैन्य अभियान चलाकर द्रास सेक्टर के रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण प्वाइंट 5140 पर पूर्ण नियंत्रण हासिल किया था।

उत्तर: यह प्रसिद्ध नारा कैप्टन वकिरम बत्रा ने प्वाइंट 5140 पर वजिय प्राप्त करने के बाद वायरलेस (रेडियो) के जरिए अपने कमांडिंग ऑफिसर को सफलता का संदेश देते हुए खुशी में कहा था।

उत्तर: इस अत्यंत कठिन मशिन की जम्मेदारी 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स (13 JAK RIF) को सौंपी गई थी, जिसकी कमान उस समय लेफ्टनैंट कर्नल योगेश कुमार जोशी संभाल रहे थे।

उत्तर: समुद्र तल से लगभग 17,000 फीट की ऊंचाई पर स्थिति होने के कारण यहां से पाकिस्तानी सैनिकी श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर नजर रख रहे थे और भारतीय आपूर्ति मार्गों पर भारी तोपखाने से गोलाबारी नर्देशित कर रहे थे।

उत्तर: कैप्टन संजीव सहि जमवाल ने इस मशिन में ब्रावो कंपनी का नेतृत्व किया था। उन्होंने आमने-सामने की लड़ाई में कई दुश्मनों को मारकर अपने क्षेत्र को सुरक्षित किया और ओह! येह, येह, येह! सग्नल भेजकर सबसे पहले जीत की सूचना दी थी।